

पाठ—18 द्वेष करने.....

दुर्योधन और कर्ण द्वैतवन के लिए रवाना हुए ।

गंधर्वराज चित्रसेन द्वारा दुर्योधन को पकड़ लिया गया ।

द्वैतवन में गंधर्वों और कौरवों की सेनाएँ आपस में एक दूसरे से युद्ध करने लगीं ।

युधिष्ठिर ने भीम और अर्जुन को कौरव सेना को गंधर्वराज से मुक्त करने के लिए भेजा

पांडवों के वनवास के समय दुर्योधन ने वैष्णव नाम यज्ञ किया ।

महर्षि दुर्वासा ने दुर्योधन के सेवाभाव से प्रसन्न होकर वर माँगने के लिए कहा ।

दुर्योधन ने कहा कि जिस प्रकार आपने मेरा आतिथ्य स्वीकार किया है वैसे ही आप अपने शिष्यों सहित मेरे भाई पांडवों के यहाँ पधारें ।

दुर्वासा ऋषि ने दुर्योधन की प्रार्थना स्वीकार कर ली ।

दुर्योधन ने कहा कि आप उस समय पहुँचना जब द्रौपदी भी भोजन कर ले ।

भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर युधिष्ठिर को अक्षय—पात्र दिया और कहा कि बारह वर्ष तक मैं इसके द्वारा तुम्हें भोजन दिया करूँगा ।

अक्षय पात्र की यह विशेषता थी कि द्रौपदी के भोजन करने के बाद उस बरतन की शक्ति अगले दिन तक के लिए समाप्त हो जाएगी ।